VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS 27 AUG 2022 No. 3 RECEIVED

SUBJECT:		Test Code:	2	1	2	3

Name of Candidate	Ishwar gurjar		
Medium Hindi/Eng.	Hindi	Registration Number	1 2 9 5 8 18
Center	Delhi	Date	2 7 0 8 2 2

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

Remarks :

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Content Competence
3. Language Competence
4. Introduction Competence
5. Structure - Presentation Competence
6. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

"एक स्वस्थ निष्ठा निष्क्रिय और आत्मसंतुष्ट नहीं, बल्कि सक्रिय और आलोचनात्मक होती है।"

"राजा बोला रात है,
रानी बोली रात है,
मंत्री बोला रात है,
संतरी बोला रात है,
यह सुबह-सुबह की बात है।"

कवि की ये पंक्तियां उस आत्मसंतुष्ट, निष्क्रिय निष्ठा की ओर इशारा करती है, जहाँ व्यक्ति में दिन को दिन और सही को सही कहने का साहस भी नहीं बचता है। निष्ठा किसी व्यक्ति, सिद्धान्त और राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता का भाव है लेकिन जब यह अंधनिष्ठा का रूप ले

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

लेती है, जब इसमे आलोचना और सुधार करने का साहस भी नहीं बचता तब ऐसी निष्ठा व्यक्ति और राष्ट्र को पतनोन्मुख कर देती है। निष्क्रिय और आत्मसंतुष्ट निष्ठा से आत्ममुग्ध तानाशाहों, रूढ़िगत समाजों और कुरीतियों को ही बढ़ावा मिलता, इससे किसी देश, समाज में प्रगतिशील बदलाव नहीं लाए जा सकते है।

इस आलोक में यह देखना जरूरी हो जाता है कि क्यों एक स्वस्थ निष्ठा के लिए सक्रियता और आलोचनात्मक दृष्टिकोण की जरूरत है? और स्वस्थ निष्ठा के अभाव में समाज, देश और व्यक्ति पर क्या प्रभाव पड़ते है?

आइए पहले समझते है स्वस्थ निष्ठा होती क्या है? और इसके

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

क्या मायने है?

निष्ठा एक ऐसा समर्पण का भाव है जहाँ व्यक्ति स्वयं को किसी व्यक्ति, सिद्धान्त के लिए प्रतिबद्ध पाता है। जैसे- लोक सेवकों की निष्ठा संवैधानिक मूल्यों, राष्ट्रीय आदर्शों, राजनीतिक कार्य-पालिका एवं जनता के प्रति अपने कर्तव्यों में होती है।

'स्वस्थ निष्ठा' में समर्पण के साथ-साथ आलोचनात्मक दृष्टिकोण, और सुधार की भावना भी होती है। इसमें निष्ठा रखने वाला व्यक्ति आँख मूँदकर अंधानुकरण नहीं करता बल्कि सही को सही और गलत को गलत कहने का अधिकार भी रखता है; जैसे-'रामायण' के पौराणिक आख्यान में एक प्रसंग

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

आता है जब 'रावण' सीता का हरण कर लंका ले आता है; जिसके कारण राम, वानर सैना सहित लंका पर चढ़ाई करने समुद्र पारकर लंका के द्वार तक आ जाते है; ऐसे मे रावण अपने सभी निष्ठावान दरबारियों से सलाह माँगते है। सभी अंधनिष्ठा से ग्रस्त दरबारी 'रावण' को 'सीता' वापस सौंपने की बजाय राम से युद्ध करने की ही सलाह देते है; वे सब रावण की इच्छानुसार ही अपना मत प्रकट करते है; लेकिन 'विभीषण' ने सच्चे हितैषी के रूप मे 'रावण' के निर्णय की आलोचना करते हुए युद्ध की बजाय सीता को ससम्मान वापस भेजने की सलाह दी; यह और बात है कि रावण

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ने सलाह नहीं मानी, जिसका परिणाम विनाश के रूप मे सामने आया।

'उपर्युक्त' प्रतीकात्मक कथा मे विभीषण की निष्ठा स्वस्थ थी क्योंकि उस निष्ठा में रावण और उसके कुल की सच्ची भलाई का भाव तथा सक्रिय सुधार की भावना निहित थी।

ऐसा ही एक उदाहरण हम महाभारत आख्यान में भी देख सकते है जहाँ 'कर्ण' 'दुर्योधन' के उपकारों के प्रति निष्ठावान एवं कृतज्ञ था, लेकिन उसने दुर्योधन को सही और उचित सलाह नहीं दी बल्कि अनुचित कार्य मे भी उसके प्रति अंधनिष्ठा बनाए रखी, जो

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अन्ततः कौरवों के समूल नाश का कारण बनी।

स्वस्थ निष्ठा के उदाहरण हम जीवन के हर क्षेत्र में देख सकते हैं और अंधनिष्ठा के दुष्परिणामों को भी सर्वत्र देखा जा सकता है।

राजनीतिक क्षेत्र में जहाँ राजनेताओं की निष्ठा अपने मतदाताओं एवं अपने संवैधानिक कर्तव्यों के प्रति होनी चाहिए वहीं नागरिकों की निष्ठा व्यक्तिपूजा और किसी के प्रति न होकर लोकतांत्रिक मूल्यों एवं मूल कर्तव्यों के प्रति होनी चाहिए।

स्वस्थ निष्ठा के अभाव के कारण ही आज राजनीति में व्यक्ति के सिद्धान्तों की बजाय उसकी पृष्ठभूमि,

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

धनबल और राजनीतिक जी हजूरी को अधिक महत्व मिल रहा है। राजनीति में कथनी और करनी का अंतर, 'आया राम गया राम की अवसरवादी प्रवृत्ति', अपराधीकरण और वोटबैंक की राजनीति का बोलबाला स्वस्थ आलोचनात्मक निष्ठा के अभाव के कारण ही है।

'कवि नागार्जुन' ने इसी बढ़ती चापलूसी और अवसरवादी राजनीतिक, बदलती निष्ठाओं पर कटाक्ष करते हुए कहा है कि-

" सिंडिकेट प्रभुओं की पग धुरि झार के
लौटे हैं, कल दिल्ली से टिकट मार के
आए दिन बहार के।

लोक सेवा में निष्ठा के आलोचनात्मक दृष्टिकोण का महत्व और बढ़ जाता है। स्वस्थ निष्ठा के अभाव में

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

एक लोक सेवक राजनीतिक कार्यपालिका को निडर, स्वतंत्र एवं उचित सलाह नहीं दे पायेगा। नेताओं की 'जी हजूरी' प्रशासन का राजनीतिकरण कर सकती है जिससे शासन पक्षपाती, संवेदनहीन और 'भ्रष्ट' हो सकता है।

भारत के पहले गृहमंत्री श्री वल्लभ भाई पेटल अपने सचिव 'वी.पी. मेनन' से चर्चा, आलोचना और सक्रिय सुझावों को ग्रहण करने के लिए जाने जाते है, जो केवल राजभक्ति या पदभक्ति तक ही सीमित न रहकर वास्तविक और उचित सहयोग, सुझाव देने पर आधारित हो।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

'पी. एन. हक्सर' और 'T. N शेषन' भी अपनी बेबाक राय और आलोचनात्मक निष्ठा के कारण ही प्रशासन में सुधार ला पाए; फिर चाहे वो बैंकों का राष्ट्रीकरण हो, बांग्लादेश की स्वतंत्रता हो या व्यापक चुनाव सुधार जैसे कार्य।

यह स्वस्थ निष्ठा एक राष्ट्र के रूप में अपने नागरिकों के सशक्तिकरण, जन कल्याण और सुरक्षा में भी होनी चाहिए। केवल नीति निर्माण और आश्वासनों से ही समाज में परिवर्तन नहीं आता। यदि आज हमारा लोकतंत्र 75 वर्ष का लम्बा सफ़र तय कर पाया; तो उसमें लोकतांत्रिक संस्थानों की निष्ठा और शासन की प्रतिबद्धता का अहम योगदान है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

~~वरक~~ वैश्विक स्तर पर देखे तो ~~इस~~ स्वस्थ निष्ठा का अभाव साफ़ नज़र आता है। कहने को तो 'संयुक्त राष्ट्र चार्टर', 'मानवाधिकार घोषणा पत्र' के प्रति राष्ट्रों की निष्ठा है, लेकिन बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव, सीमा-विवाद, संरक्षणवाद, वि-वैश्वीकरण की प्रवृत्तियां और जलवायु परिवर्तन शमन कार्यवाहियों से हाथ खिंचते राष्ट्रों में इस निष्ठा का अभाव ~~साफ~~ देखा जा सकता है।

रूस-यूक्रेन संघर्ष हो या म्यांमार में सैन्य तख्तापलट, चीन की एकाधिकारपूर्ण महत्वकांक्षा हो या मध्य एशिया के गृहयुद्ध सब सक्रिय और आलोचनात्मक निष्ठा के अभाव से पैदा हुई अव्यवस्थाओं का ही परिणाम है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

व्यक्तिगत स्तर पर देखे तो बढ़ता उपभोक्तावाद, नई आधुनिक दासता, मानवीय सम्बंधों की कम होती गर्मजोशी और अकेलापन, आत्मनिर्वासन हमारी विकृत निष्ठाओं का परिणाम है। इन्ही विकृत निष्ठाओं से परेशान व्यक्ति के लिए किसी शायर ने कहा भी है कि -

"सिने में जलन आँखों में तूफां सा क्यों है
इस शहर में हर शख्स परेशां सा क्यों है"

प्रश्न उठता है कि स्वस्थ निष्ठा के लिए व्यक्ति, देश और विश्व के स्तर पर क्या किया जाना चाहिए?

व्यक्तिगत स्तर पर व्यक्ति को अपने सिद्धान्तों के प्रति निष्ठावान रहते हुए नए प्रगतिशील विचारों को भी

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अपनाना चाहिए, विविधता के प्रति सहिष्णु, चर्चा के प्रति तार्किकता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। गांधी जी के अनुसार "किसी मूल्य में विश्वास करना और उसे न जीना बेईमानी है"।

राष्ट्र के स्तर पर सरकार और प्रशासन को नीति-निर्देशक तत्व और सतत विकास लक्ष्यों (SDG) के प्रति निष्ठा रखते हुए। राजनेताओं को अपने वादों एवं विचारधाराओं पर खरा उतरना चाहिए। चर्चा की संस्कृति लोकतंत्र का आधार है इसलिए आलोचना को सकारात्मक रूप में लेना चाहिए। मीडिया की स्वतंत्रता एवं नागरिकों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सम्मान हो। नवाचार, प्रगतिशीलता और सर्वोत्तम

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वैश्विक प्रथाओं को अपनाते हुए संविधान द्वारा निर्धारित नियमों का पालन हो ताकि जन कल्याण से जग कल्याण हो सके।

वैश्विक स्तर पर नियमआधारित व्यवस्था और संयुक्त राष्ट्र प्रणाली में देशों की निष्ठा बढ़ाने के प्रयास हो। मध्यकालीन मत्स्य न्याय या जिसकी लाठी उसकी भैंस की प्रवृत्ति से बचना होगा। राष्ट्रों के मध्य विभेदित रूप समान उत्तरदायित्व को लागू करते हुए संवाद के मंचों को और अधिक समावेशी रूप रचनात्मक बनाना होगा।

अन्त में हमारी निष्ठाएं ऐसी न हो जैसा कि एक शायर ने कहा है – लगा के आग शहरों को बादशाह ने यह कहा
उठा है आज दिल में तमाशे का शौक बहुत
झुका के सर सब शाहपरस्त बोल उठे
हुजूर का शौक सलामत रहे और शहर बहुत है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इस तरह की अंधभक्ति और मानसिक गुलामी की बजाय हमारी निष्ठा सुधार करने वाली और बदलावों के प्रति सजग हो। हम अन्याय और अनुचित कार्यों पर न 'कर्ण' की तरह चुप रहे न हम किसी खूँटे से बंध कर दिन को रात कहे ; क्योंकि यह विज्ञान का युग है और इस युग मे वही संस्कृति, सभ्यता प्रगति करती है जिसमे विश्लेषण और आत्मशोधन का साहस हो।

—— x ——

खण्ड - B

"जो मितव्ययिता को नहीं अपनाएगा उसे कष्ट में रहना पड़ेगा"

"आमदनी अट्ठन्नी खर्चा रुपया" फिल्म का गाना "न बाप बड़ा न भइया, सबसे बड़ा रुपया" हो या भक्तिकालीन कवि वृन्द का यह नीति-दोहा -

"अपनी पहुँच बिचारी के करतब करिये दौर
तेते पाँव पसारिए जेती लम्बी सौर"

हमें मितव्ययिता के महत्व को बताते हैं। व्यक्ति की इच्छाएँ और आकांक्षाएँ अनन्त है; एक इच्छा को पूरा करने से पहले ही दूसरी इच्छा मन में बलवित हो उठती है। इच्छाओं के पीछे

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भागना और दूसरों के महल को देखकर अपना झोंपड़ा फूँक देने की प्रवृत्ति व्यक्ति को 'आर्थिक संकट' में डाल सकती है; कर्ज के कुचक्र में फँसा सकती है और प्रेमचन्द ने तो कहा ही है कि

"जीवन का अनुभव यही बताता है कि कर्ज वह मेहमान है, जो एकबार आने के बाद, वापस जाने का नाम ही नहीं लेता।" –

इस ऋणजाल से बचने का एकमात्र समाधान है मितव्ययिता की प्रवृत्ति को अपनाना।

मितव्ययिता से सीधा-अर्थ तो यह निकाला जा सकता है कि व्यक्ति को कम खर्च करना

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

चाहिए या अनावश्यक उधार लेकर घी पीने की प्रवृत्ति से बचना चाहिए, लेकिन इसका व्यापक अर्थशास्त्रीय अर्थ देखे तो हम पाते है कि यह न केवल कम खर्च करने की प्रवृत्ति है बल्कि अपने संसाधनो को कब, किस कार्य पर, ~~कितना~~ किस तरह से उपयोग किया जाए उसका प्रबंधन करना ही मितव्ययिता है। मितव्ययिता एक संस्कार है और भारतीय समाज का एक मूल्य भी,

इस आलोक में मितव्ययिता का महत्व समझते हुए यह जानने का प्रयास करते है कि इसे नहीं अपनाने से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों मे किन बाधाओं का सामना करना

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

पड़ सकता है।

अर्थव्यवस्था में मितव्ययिता का अत्याधिक महत्व है। विश्व प्रसिद्ध निवेशक वॉरेन बफेट के अनुसार "कमाई कुछ और नहीं व्यक्ति की बचत है" और यही बचत आती है अल्पव्यय करने की आदत से।

राष्ट्रीय बचत, राष्ट्रीय घरेलू निवेश की मांग की पूर्ति का बड़ा साधन है। आर्थिक सर्वेक्षण-2020-21 के अनुसार भारत की घरेलू बचत -32% है।

पूंजी निर्माण में इस बचत का प्रयोग कर कोई भी राष्ट्र अपनी सामाजिक और आर्थिक अवसंरचना का

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

निर्माण कर सकता है।

भारत के विकासशील राष्ट्र है; जिसकी आबादी लगभग 130 करोड़ है। बढ़ती हुई जनसंख्या और कम होते संसाधनों के मध्य देश का सतत् एवं समावेशी विकास के करना चुनौतिपूर्ण कार्य है। संसाधनों का मितव्ययितापूर्ण उपयोग करना हमारी मजबूरी और समय की मांग है।

130 करोड़ आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु दक्षता, प्रभावशीलता और मितव्ययिता हमारे नीति निर्माण और लोक नीति क्रियान्वयन

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

का हिस्सा होना चाहिए।

भारत में विश्व की 17.5% आबादी निवास करती है जबकि भारत के पास कुल भूमि - 2.4% एवं पेयजल स्रोतों का मात्रा 1-1.5% ही है। इन न्यूनतम संसाधनों को उपयोग लेते हुए हमे इन्हे भविष्य के लिए बचाना भी है; इसलिए राष्ट्रीय स्तर पर मितव्ययिता समय की माँग है।

व्यक्तिगत स्तर पर अनावश्यक किन्तु अनिवार्य बना दिए गए खर्चों के कारण व्यक्ति अपनी क्रय क्षमता से बाहर जाकर खर्च करता है और ऋण जाल में फंस जाता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

लोक नीति के एक सर्वे के अनुसार एक किसान अपने जीवन के औसत -10 वर्षों की पूंजी को एक सामाजिक समारोह जैसे -मृत्यु भोज, विवाह, सवामणी में खर्च कर देता है, जिसके कारण वह शिक्षा, स्वास्थ्य और व्यवसाय घर में निवेश नही कर पाता। इस कुचक्र के कारण ही कहा जाता है कि एक किसान उधारी में ही जन्म लेता है, उधारी में ही मरता है और विरासत के रूप में भी ऋण देकर जाता है।

अनावश्यक ~~धन~~ खर्च और धन, खाद्यान, जल, ऊर्जा की अनुचित बर्बादी के कारण ही गरीबी, कुपोषण

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

आर्थिक असमानता जैसी विकराल होती समस्याएं हमारे युग की सच्चाई है।

ऑक्सफैम इंटरनेशनल के अनुसार भारत की 1% आबादी के पास 22% राष्ट्रीय सम्पदा है। वही बहुआयामी गरीबी सूचकांक के अनुसार 27.9% आबादी गरीबी में जीवन जी रहे है।

यह असमानता उत्पाद की कमी के कारण न होकर बचत के अभाव और वितरण के असमान प्रारूप के कारण है। किसी के पास इतना है कि उसे रखने की जगह नहीं है और किसी के पास रहने की भी जगह नहीं है। यह असमानता हमारे वितरणमूलक न्याय के दर्शन की असफलता तो है ही साथ ही मितव्ययिता की असफलता भी है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मितव्ययिता न अपनाने का एक परिणामी आँकड़ा हमे FCI की खाद्य स्टोरेज रिपोर्ट में देखने को मिलता है, जिसके अनुसार कुल खाद्यान्न उत्पादन का 25-30% खराब हो जाता है जबकि हर रात 19 करोड लोग भूखे पेट सोते है।

बढ़ते हुए शहरीकरण, सिकुड़ते खेत, और विकराल होती मंहगाई मितव्ययिता की आवश्यकता को और बढा देती है। भूमि विखण्डन के कारण कृषि उत्पादकता गिर रही है; जिससे आय में बढोतरी मंहगाई बढ़ने के कारण नकारात्मक हो जा रही है। आज दशा यह है कि 'पीपली लाइव' फिल्म का गीत प्रासंगिक हो उठा है—

॥ सखी सइँया तो बहुत कमात है। मंहगाई डायन खाय जात है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

व्यापक अर्थों में देखे तो मितव्ययिता का संस्कार केवल आर्थिक जीवन के लिए ही जरूरी नहीं है यह राजनीति, सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन मे भी जरूरी है।

मितव्ययिता हमारी अभिव्यक्ति में भी होनी चाहिए। गाँधी जी के अनुसार एक सत्याग्रही को अनावश्यक अभिव्यक्ति से बचना चाहिए। हमारे दौर की एक विडंबना यह भी है कि हेट स्पीच, फेक न्यूज के दौर में सूचनाओं की बाढ़ में अभिव्यक्ति और भाषा की सारी मर्यादा ही खत्म हो गई है दुष्यन्त की गजल का एक शेर भी है कि-

इस दौर को हुआ क्या है
लोग गाते-गाते चिल्लाने लगे है।

यह मितव्ययिता हमे दैनिक जीवन में भी अपनानी होगी।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ऊर्जा के उपभोग में, खाने में, जल के उपभोग एवं भौतिक वस्तुओं के संग्रह में। अपनी जरूरत के अनुसार ही वस्तुओं का संग्रह होना चाहिए।

राजनीति में धन के प्रयोग में मितव्ययिता की सीमा रेखा का पालन हो। राजनीतिक चुनाव केवल धनतंत्र के चुनाव बनकर न रह जाए।

अन्त में मितव्ययिता को एक संस्कार के रूप में ग्रहण करते हुए अपनी जीवन शैली को प्रधानमंत्री जी द्वारा प्रस्तावित LiFe मिशन (Life style for envirnoment) के अनुसार करना होगा साथ ही मन में

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

'कबीर' जैसा सन्तोष लाना होगा जहां वह कहते है कि-

"साईं इतना दिजिए जामे कुटुम्ब समाय
मैं भी भूखा ना रहू साधु न भूखा जाए"

मितव्ययिता बढ़ते हुए जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और SDG लक्ष्यों की पूर्ति के लिए भी जरुरी है। हमारा लक्ष्य हथियारों ~~और~~ की होड की से बचते हुए निशस्त्रीकरण की ओर बढ़ना भी होना चाहिए क्योंकि वास्तविक लडाई भूखमरी, गरीबी और शोषण के विरुद्ध लडी है।

हम सब जानते है कि अन्ततः बुन्द-बुन्द से ही घड़ा भरता है क्योंकि खर्च करने से कुबेर का खजाना भी कम पड़ जाता है। इस बात को बाबा-फरीद की इन पंक्तियों के साथ

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

समाप्त करना उचित होगा कि—

"रूखी-सूखी खाकर ठण्डा पानी पी
देख पराई चुपड़ी ना तरसाई जी"

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

निष्ठा [व्यक्ति, समाज, स्वयं] → सुधार

(1) निष्ठा निष्क्रिय क्यों? क्यों? पवन
-ve कर्ण
(2) सक्रिय क्यों | सुधार

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

रफ

Eg- राजा बोला रात है रानी बोली रात
Eg- जिन्दगी भर मालिक यदि झूठा
Eg लगता है आम शहर को बादशाह ने यह कहा उत्तर है मन में लोगों का शौक बहुत

विनम्र तरीके → दुनिया।

→ स्वच्छ निष्ठा क्या?
- ईमानदार
- अडीग
- अटूट
- विश्वसनीय

Eg-

अस्पष्ट निष्ठा — कर्ण, शकुनी
- जी हजूरी
- चापलूसी

Eg- वॉलेयर

आलोचना [बुराई करना, रोके]

सक्रिय Eg- विभीषण

आँख मूंदकर भरोसा

Eg- द्रोणाचार्य

Eg- भीष्म - द्रोण अंधला दोनों चुप पड़ेत

राजनीति
→ वीर व्यक्तिपूजा, अंधभक्ति
→ पर्चों की संस्कृति अभाव | तानाशाही जन्म — हिटलर
→ भारतीय राजनीति [- गांधी, पटेल; → नेहरू]
वोटर भी

आधुनिक → लोक सेवक
→ संविधान → हकीकत
→ सामाजिक बुराइयां (आलोचना)
→ स्वतंत्र एवं स्वच्छ सलाह
Eg- वीपी मेनन v/s पटेल
पी एन हक्सर v/s इन्दिरा गांधी
T.N. शेषन

- राजाराम मोहनराय
- ईश्वर...

ER → व्हाइसलर (असक्रिय निष्ठा [रूस-यूक्रेन — अमेरिका X; → चीन X] स्वामित्व)
→ जलवायु परिवर्तन, विज्ञान